JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

धालभूमगढ़ प्रखंड , झारखंड के आदिवासी महिलाओं की आर्थिक स्वाबलंबना : संभावनाएं और चुनौतियाँ

डॉ॰ राम कृष्ण पाल

व्याख्याता, स्नातकोत्तर राजनीति विज्ञान विभाग, घाटशिला कॉलेज घाटशिला, कोल्हान विश्वविद्यालय, चाईबासा, झारखंड, भारत

सारांश

धालभूमगढ़ प्रखंड, झारखंड में जनजातीय महिलाओं की आर्थिक स्वाबलंबना एक महत्वपूर्ण पहलू है। इस अध्ययन के माध्यम से, उनके लिए विशेष अवसरों का मूल्यांकन किया गया है, साथ ही महत्वपूर्ण बाधाओं का भी संज्ञान रखा गया है। इसके अलावा, उनके सामाजिक, सांस्कृतिक, और आर्थिक गतिविधियों के विस्तार में भी जांच की गई है। धालभूमगढ़ प्रखंड में जनजातीय महिलाओं के लिए आर्थिक स्वाबलंबना के लिए मुख्य अवसरों और चुनौतियों का पता लगाने में यह अध्ययन महत्वपूर्ण है। यह अध्ययन महिलाओं को आर्थिक स्वायत्तता के प्रति जागरूक करेगा और उन्हें अधिक आत्मनिर्भर बनाने में मदद करेगा। सारांशक रूप में, इस अध्ययन के माध्यम से, धालभूमगढ़ प्रखंड में जनजातीय महिलाओं की आर्थिक स्वाबलंबना के मुख्य अवसरों और चुनौतियों का पता लगाया गया है, जो उन्हें आर्थिक स्वतंत्रता की दिशा में अधिक आगे बढ़ने में मदद करेगा।

मुख्य शब्द: जनजातीय महिलाएं, आर्थिक सशक्तिकरण, धालभूमगढ़ प्रखंड, अवसर और चुनौतियाँ

परिचय[1]

झारखंड के समृद्ध सांस्कृतिक और भौगोलिक संदर्भ में स्थित धालभूमगढ़ प्रखंड में जनजातीय महिलाओं की आर्थिक स्वाबलंबना एक विकेंद्रित प्रासंगिकता और चुनौतियों का जटिल परिदृश्य प्रस्तुत करती है। धालभूमगढ़ प्रखंड के निवासियों में भारी जनजातीय आबादी के लिए आर्थिक स्वायत्तता की महत्वपूर्णता अत्यधिक है। इस परिचय में, जनजातीय महिलाओं के आर्थिक स्वाबलंबना के बारे में जानकारी प्राप्त करने, उनके सामने उपलब्ध अवसरों को प्रकट करने और उनकी प्रगति में आने वाली चुनौतियों को उजागर करने का प्रयास किया गया है। धालभूमगढ़ प्रखंड में जनजातीय महिलाएं समाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं और सामाजिक, सांस्कृतिक, और आर्थिक क्षेत्रों में योगदान करती हैं। हालांकि, उनके आर्थिक रूप से परिस्थितिगत और पीछे रहने की समस्याएं हैं। यह परिचय धालभूमगढ़ प्रखंड में जनजातीय महिलाओं की आर्थिक स्वाबलंबना के विभिन्न पहलुओं को समझने का माध्यम है और आगामी खंडों में और विश्लेषण के लिए आधार रखता है।

[1] (PDF) झारखण्ड के आंदोलनों एवं संघर्षों में आदिवासी महिलाओं की सहभागिता)researchgate.net)

स्रोत: - गूगल मानचित्र

जनजातीय समाज में महिलाएं अपने सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, और धार्मिक जीवन के लिए एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं और उन्हें अपने समाज में एक आर्थिक संपत्ति के रूप में माना जाता है। लेकिन वे शिक्षा, रोजगार, अच्छे स्वास्थ्य और आर्थिक सशक्तिकरण आदि जैसे विभिन्न जीवन के क्षेत्रों में बहुत पीछे छूट गई हैं। हालांकि, वे कुशल हैं, लेकिन उनके पास संसाधनों और आर्थिक गतिविधियों पर प्रतिबंध हैं। इसलिए, समाज में उनके सम्पूर्ण विकास को साधने के लिए जनजातीय महिलाओं की आर्थिक सशक्तिकरण की आवश्यकता है। वंचित समूहों की आर्थिक सशक्तिकरण न केवल राज्य और सिविल समाज द्वारा इन समूहों के लिए सामाजिक-राजनैतिक अंतरिक्ष के निर्माण की प्रक्रिया को शामिल करता है, बल्कि यह एक दृढ़ संघर्ष और प्रतिरोध के माध्यम से मानव निर्मित बंधनों से मुक्ति की प्रक्रिया भी है। यह भी उन वंचित समूहों की आशाओं और सपनों का साकार होना है जो राजनीतिक, सामाजिक, और आर्थिक रूप से उन्हें प्रभावित करते हैं। आर्थिक सशक्तिकरण का मुद्दा भी समानता, स्वतंत्रता, और साझेदारी जैसे पहलुओं से जुड़ा हुआ है। इसलिए, जनजातीय महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण का अविष्कार काफी नया है और यह हाल ही में सामाजिक वैज्ञानिकों, नीति निर्माताओं, और विकास क्रियाकलापियों के बीच एक नई अर्थात्मकता को प्राप्त किया है। इसलिए, जनजातीय महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण के सभी अवरोधों को पार करने के लिए वैज्ञानिक अनुसंधान एक अत्यावश्यक आवश्यकता है।

महिला सशक्तिकरण[2]: "महिला सशक्तिकरण" अब सामाजिक वैज्ञानिकों के लिए महत्वपूर्ण चर्चा का विषय बन गया है। 'सशक्तिकरण' का अवधारणा पहले राजनीतिक वैज्ञानिकों ने हाइलाइट किया था। मानव संभावनाओं का प्रभावी उपयोग और अपने आप के बारे में ज्ञान का अनुभव सभी व्यक्तियों की सबसे महत्वपूर्ण क्षमताओं में

[2] भारत में महिला सशक्तिकरण -Drishti IAS

माना जाता है, जिससे 'सशक्तिकरण' की जड़ है। 'महिला सशक्तिकरण' शब्द महिलाओं के अपने संभावनाओं के बारे में सचेतना को प्रतिनिधित्व करता है, जैसा कि स्वतंत्रता की क्षमता को।

तालिका 1 में पाँच अलग-अलग गांवों-चुखरीपारा, जोनबानी, मौदाशोली, बेहरा और रौतारा में पिता, पति और स्वयं व्यक्तियों के व्यवसाय को प्रदर्शित किया गया है। सभी गांवों के लिए कुल योग 1516 है। तालिका में सूचीबद्ध व्यवसायों में व्यवसाय धारक, दैनिक मजदूर, किसान, पेशेवर, सेवा धारक, कुशल मजदूर, छोटे दुकानदार और बेरोजगार व्यक्ति शामिल हैं।

दिहाड़ी मजदूरों की सबसे अधिक संख्या 154 के साथ रौतारा में है, इसके बाद जोनबनी में 136 और फिर चुखरीपारा में 140, बेहरा में 79 और मौदाशोली में सबसे कम 74 दैनिक मजदूर हैं।

तालिका से यह भी पता चलता है कि पेशेवर तीसरे सबसे बड़े व्यवसाय हैं, जिसमें 68 व्यक्तियों के साथ जोनबनी में सबसे अधिक संख्या है, इसके बाद 30 व्यक्तियों के साथ मौदाशोली, 62 व्यक्तियों के साथ चुखरीपारा और 55 व्यक्तियों के साथ रौतारा है। कुशल मजदूरों की संख्या सबसे कम है, जिनमें मौदाशोली में केवल 20, जोनबानी में 33, चुखरीपारा में 45 और रौतारा में 48 हैं। यह तालिका विभिन्न गाँवों में व्यक्तियों की रोज़गार की स्थिति और उनके द्वारा की जाने वाली नौकरियों के प्रकार के बारे में जानकारी प्रदान करती है। डेटा इन गांवों की आर्थिक स्थिति और उनके निवासियों के लिए उपलब्ध नौकरियों के प्रकार को समझने में रुचि रखने वाले नीति निर्माताओं और शोधकर्ताओं के लिए उपयोगी हो सकता है।

पिता/पति/स्वयं का व्यवसाय	**गांव का नाम**					
	बेहरा	चुखरीपारा	जोनबानी	मौदाशोली	रौतारा	कुल योग
व्यापार धारक	6	11	11	14	12	54
दैनिक मज़दूरी	79	140	136	74	154	583
किसान	41	77	89	48	74	329
पेशेवर	32	62	68	30	55	247
सेवाधारी	6	7	10	7	16	46
कुशल श्रमिक	17	45	33	20	48	163
छोटा दुकानदार	6	11	14	4	9	44
बेरोज़गार	4	12	10	12	12	50
कुल योग	191	365	371	209	380	1516

तालिका 1 स्रोत: - लेखक द्वारा उत्पन्न

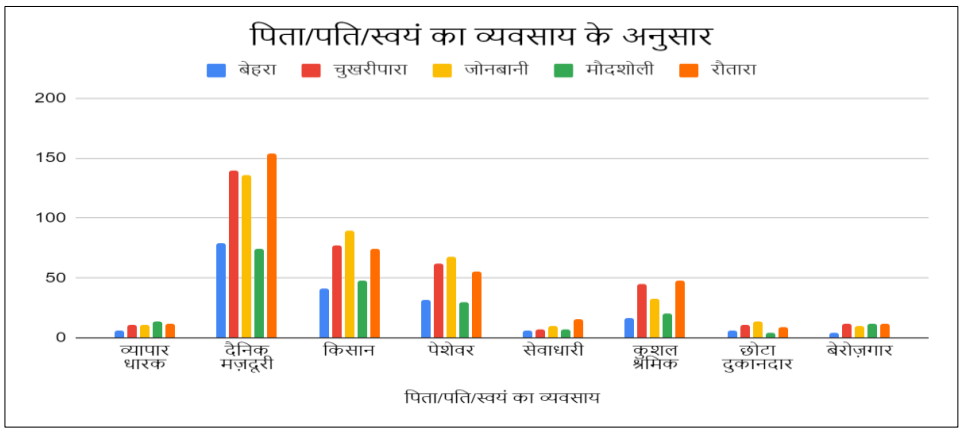

ग्राफ स्रोत: - लेखक द्वारा निर्मित

वस्तुनिष्ठ

झारखंड के धालभूमगढ़ प्रखंड में आदिवासी महिलाओं की वर्तमान आर्थिक स्थिति का मूल्यांकन करना और उन्हें आर्थिक स्वाबलंबना प्राप्त करने में आने वाली प्रमुख अवसरों और चुनौतियों की पहचान करना।

साहित्य की समीक्षा

[1] शंकर और उनके सहकर्मी (2021) ने एक अन्वेषणात्मक अध्ययन किया जिसमें MGNREGS के अंतर्गत अनुदानरहित महिलाओं, जनजातियों, और छोटे किसानों के लिए हाल ही में शामिलजन एवं स्वायत्तता के बारे में अध्ययन किया गया। MGNREGA को 2005 में एक अधिकार-आधारित नेटवर्क के रूप में लागू किया गया था जो गरीब परिवारों को अकुशल वेतन और रोजगार प्रदान करने के लिए है, धीरे-धीरे लंबे समय तक स्थायी संपत्ति बनाने के नवाचारी योजनाओं को शामिल करते हुए जीविका को बढ़ावा देने के लिए। इस पेपर ने 2016 में झारखंड सरकार द्वारा प्रारंभ की गई हॉर्टिकल्चर पहल के प्रभाव को छोटे किसानों, अनुदानरहित महिलाओं, और जनजाति के परिवारों पर अध्ययन करने की कोशिश की। मुख्य जानकारी के लिए MGNREGA की आधिकारिक वेबसाइट से द्वितीयक आंकड़े का प्राप्त किया गया। झारखंड के दक्षिणी छोटानागपुर विभाग के दो जिलों से बागवानी योजना के नमूना लाभार्थियों का प्रश्नावली आधारित साक्षात्कार किया गया। अध्ययन ने दिखाया कि MGNREGA के तहत हॉर्टिकल्चर योजना, "बिरसा मुंडा बागवानी योजना" (BMBY), इस योजना के लाभार्थियों पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाली। इस योजना में अनुसूचित जनजातियों और अनुसूचित जातियों को शामिल किया गया। इसने मार्जिनल भूमि स्वामित्व वाले परिवारों को लाभार्थी बनाया। एनजीओ, सीबीओ, और प्रशासन से संबंधित प्रशिक्षण और समर्थन की प्रावधानिकता ने अधिकांश लाभार्थियों को शामिल किया और समाज के मार्जिनल अनुभागों को शामिल किया।

[2] ऐंड, टी·, एवं ओराओं, एस· (2013) ने झारखंड में जनजातीय महिलाओं की आर्थिक सशक्तिकरण की जांच की। जनजातियों की समाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, और धार्मिक जीवनशैली में महिलाओं का महत्वपूर्ण योगदान था और उन्हें अपने समाज में आर्थिक संपत्ति माना जाता था। हालांकि, उन्हें शिक्षा, रोजगार, अच्छी स्वास्थ्य, और आर्थिक सशक्तिकरण जैसे विभिन्न पहलुओं में अग्रसर होने में अभाव था। सशक्तिकरण को कमजोर वर्गों, जैसे कि गरीब महिलाओं, विशेष रूप से जनजातीय महिलाओं, को अपने निर्णय लेने की शक्ति और संसाधनों को प्राप्त करने के रूप में समझा गया। डेटा का विश्लेषण करने और क्षेत्रीय अवलोकन करने के बाद, प्रमुख बाधाओं में शिक्षा की कमी, खराब स्वास्थ्य स्थिति, उच्च शिशु मृत्यु दर, कम वेतन कार्य का स्तर, स्व-रोजगार के अवसरों की कमी, संगठनात्मक क्षमता, और नेतृत्व की गुणवत्ता थी। सरकार और गैर-सरकारी संगठनों से झारखंड की जनजातीय महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण के लिए उपयुक्त योजनाओं और कार्यक्रमों की तैयारी करने की अपील की गई।

[3] पल्ली, आर।, देब, ए।, और भद्रा, पी। (2020) अध्ययन ने झारखंड के जनजातियों के गाँवों में स्व-सहायता समूहों (SHGs) के माध्यम से महिलाओं की सशक्तिकरण पर ध्यान केंद्रित किया। "महिला सशक्तिकरण" सामाजिक वैज्ञानिकों के बीच चर्चा का एक महत्वपूर्ण विषय बन गया है, जिसका धारावाहिक रूप से राजनीतिज्ञों ने पहले से ही हाइलाइट किया था। मानव संभावनाओं का प्रभावी उपयोग और स्वज्ञान सशक्तिकरण के लिए महत्वपूर्ण क्षमताओं के रूप में मानी जाती है। "महिला सशक्तिकरण" शब्द महिलाओं की अपनी क्षमताओं की जागरूकता को संकेत करता है। इसके बीच, SHG पहल का उद्देश्य महिलाओं की समूह उपायों के माध्यम से उनकी क्षमताओं को खोलना है, जो उन्हें खुद की मदद करने में सक्षम बनाता है। इसके बावजूद, महिला SHG की स्थिति कठिन पाई गई। हालांकि, सम्पूर्ण स्थिति को सामान्यीकृत करना कठिन है क्योंकि विभिन्न स्वैच्छिक संगठनों द्वारा कई सफल कहानियाँ रिपोर्ट की गई हैं। अध्ययन ने झारखंड के देवघर और पूर्व सिंहभूम जिलों में एनजीओद्वारा विकसित महिला SHG की दोबारा जांच करने का उद्देश्य रखा। जनजातियों के सामाजिक-आर्थिक जीवन को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारकों में परिवारिक आधारित खेती एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, जिसमें लिंग भूमिकाएँ एक महत्वपूर्ण पहलू हैं। जनजातीय महिलाएं जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में घरेलू और आर्थिक जिम्मेदारियों में संलिप्त हैं। अध्ययन ने पृथक कृत्रिम अनुसंधान डिजाइन का उपयोग किया, डेटा संग्रह के लिए गणनात्मक और गुणात्मक विधियों का उपयोग किया, जिसमें सहभागी ग्रामीण मूल्यांकन और फोकस समूह चर्चा शामिल थी। समाज-आर्थिक, राजनीतिक, और उद्यमिता दृष्टिकोण पर ध्यान केंद्रित करते हुए, अध्ययन ने SHG द्वारा प्राप्त समस्याओं और प्रतिबंधों को संबोधित करने के उपाय सुझाए।

[4] रेवानी, एस· के·, और तोचवांग, एल· (2016) अध्ययन का उद्देश्य झारखंड के रांची जिले में पालतू पशु पालन में लगे महिला स्व-सहायता समूह (SHG) के सामाजिक सशक्तिकरण का मूल्यांकन करना था। डेटा को 140 सदस्यों से एक संरचित साक्षात्कार अनुसूची का उपयोग करके बारह यादृच्छिक चयनित समूहों के सदस्यों

से एकत्र किया गया। नतीजे दिखाते हैं कि अधिकांश सदस्य मध्यम आयुवाले थे, अशिक्षित थे, अनुसूचित जनजाति वर्ग के थे, छोटे-आकार के परिवारों के थे, सीमित विस्तार संपर्क और सामूहिक साधन संपर्क, और कृषि को अपना प्राथमिक व्यवसाय बताते हुए, सीमित भूमि का होल्डिंग रखते थे। समूहों में से, आधे सुअर पालन में लगे थे, तीन में से एक तिहाई बकरी पालन में लगे थे, और बाकी (16.67%) सदस्यों ने अपनी आय उत्पन्न करने के लिए गैंडा पालन में लगे थे, जिनमें से कुछ सदस्य सभी गतिविधियों में भाग ले रहे थे। अध्ययन ने इसके बाद समूहों में सदस्यों के सामाजिक सशक्तिकरण में एक महत्वपूर्ण सकारात्मक परिवर्तन को हाइलाइट किया। इसमें स्वायत्तता स्तर में वृद्धि, परिवार के निर्णय में भागीदारी, और सदस्यों के बीच सामाजिक भागीदारी में वृद्धि शामिल थी। हालांकि, अध्ययन ने सदस्यों के बीच आर्थिक स्वतंत्रता, आय पर नियंत्रण, और समूह या समुदाय स्तर पर निर्णय लेने में सकारात्मक लेकिन गैर-साइनिफिकेंट परिवर्तन नोट किया।

[5] घोष, बी· एन·कागज का उद्देश्य झारखंड के गांवों में जनजातीय महिलाओं के बीच विकास के सूचक के रूप में सशक्तिकरण का अन्वेषण करना था। महिलाओं का सशक्तिकरण 20वीं सदी के अंत में एक महत्वपूर्ण विषय के रूप में सामने आया, जिसे एक प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया गया है जहां महिलाएं अपनी जरूरतों और रुचियों का मुक्त रूप से विश्लेषण, विकास, और आवाज उठा सकती हैं। भारत का लिंग विकास सूचक (GDI) और लिंग विकास माप (GDM) में संयुक्त राष्ट्र विकास के वार्षिक मानव विकास रिपोर्ट में नोटीय रूप से कम है। लिंग सशक्तिकरण माप (GEM) को संयुक्त राष्ट्र विकास के दिशानिर्देशों के आधार पर तैयार किया गया है, जिसमें महिलाओं के लिए राजनीतिक और आर्थिक भागीदारी, निर्णय शक्ति, और आर्थिक संसाधनों पर नियंत्रण की अवसरों पर ध्यान केंद्रित किया गया है। तथापि, झारखंड में अत्यंत ग्रामीण परिसर को ध्यान में रखते हुए, मानक के चरणों को ध्यान में रखते हुए, इसके लिए समीपस्थ उपयोग के विकल्प को ध्यान में रखा गया। कागज (a) सामाजिक-आर्थिक चरणों के महत्व को हासिल करने में महिलाओं के सशक्तिकरण स्तर का महत्व उजागर करने, जो मानव विकास की ओर ले जाता है, और (b) महिलाओं के स्वास्थ्य और पर्यावरण के बारे में उनके जागरूकता स्तर की जांच करना था। अध्ययन ने दिखाया कि अध्ययन क्षेत्र में शिक्षा और स्वास्थ्य के बारे में जागरूकता का स्तर संतोषप्रद नहीं था।

[6] आशोक, एम· वी·, और ओझा, पी। झारखंड महिला स्व-सहायता पोल्ट्री संघ एक सहकारिता का प्रमुख उदाहरण के रूप में प्रकट हुआ। 2002 में, प्रदान ने, मुर्गी पालन उद्योग के सहयोग से, झारखंड को ब्रायलर पक्षियों के लिए एक महत्वपूर्ण घाटे बाजार के रूप में खोलने का एक व्यापक बाजार अध्ययन की कमीशन की। अध्ययन ने जीएसटी एक मात्रिक टन (मीट्रिक टन) में लाइव पक्षियों की दैनिक बिक्री का अनुमान लगाया, जो कि प्रमुख सेंन्टर लार्ज और स्मॉल टाउन, विशेष रूप से औद्योगिक और खनन क्षेत्रों में स्थित हैं, जो कि ब्रायलर पक्षियों की बड़ी आवश्यकता है। हालांकि, झारखंड में औसत दैनिक उत्पादन 12 मीट्रिक टन से अधिक नहीं था। इस मामूली अंतर को पूरा करने के लिए, पड़ोसी राज्य जैसे पश्चिम बंगाल, उड़ीसा, और

छत्तीसगढ़, साथ ही मध्य प्रदेश जैसे दूर के राज्य भी झारखंड को पक्षियों की आपूर्ति करते थे। झारखंड में मुर्गी बाजार का वास्तविक अनुमानित वार्षिक वृद्धि दर लगभग 20 प्रतिशत थी।

[7] लोहानी, जे· के·, और ओली, डी। गत कुछ समय में ग्रामीण महिलाओं की आर्थिक सशक्तिकरण एक महत्वपूर्ण मुद्दा के रूप में सामने आया है, जिसका समझाना है कि जब महिलाएं आर्थिक रूप से सशक्त होती हैं, तो वे न केवल अपनी समुदायों को उन्नति प्रदान करती हैं बल्कि पूरे राष्ट्र को भी। उत्तराखंड के ग्रामीण पहाड़ी क्षेत्रों में, महिलाएं प्रमुखतः कृषि और संबंधित गतिविधियों में लगी होती हैं, जो अक्सर परिचालक भूमिकाओं के रूप में देखी जाती हैं, जो परिवार के आर्थिक योगदान में थोड़ा योगदान करती हैं। उनके निःप्रतिष्ठानित और कम मूल्यांकित काम की यह धारणा उनकी जीवन की सुधार में बाधा के रूप में काम करती है। माइक्रोफाइनेंसिंग, खासकर स्व-सहायता समूहों (एसएचजी) के रूप में समन्वय और सहकारी प्रयासों के माध्यम से, क्षेत्र में महिलाओं के लिए नई आशा की एक नई किरण प्रदान की है। वर्तमान पेपर का उद्देश्य उत्तराखंड के पहाड़ी क्षेत्रों में ग्रामीण महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्तिकरण में इन एसएचजी की भूमिका पर चर्चा करना था, जिससे कि उनके सामाजिक और राजनीतिक सशक्तिकरण और समग्र विकास का मार्ग खोला जा सके। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए, एक अच्छी ढंग से संरचित साक्षात्कार सूची का उपयोग किया गया, साथ ही प्रतिनिधियों के व्यक्तिगत और समूह आधारित साक्षात्कार, और अध्ययन क्षेत्र का पायलट सर्वेक्षण। इन उपकरणों का उपयोग करके अध्ययन के प्रायोगिक परिणाम निकालने के लिए डेटा एनालिसिस सॉफ़्टवेयर का उपयोग किया गया।

[8] कुमार, पी। (2018)। झारखंड में बाधा और वंचितता के परिणाम ने परियोजना स्थलों से कई लोगों को बलात्कारी रूप से बाधित किया, जिससे उनकी भूमि और आजीविका का नुकसान हुआ। जो लोग उखाड़े गए और अन्य स्थानों पर पुनः स्थानांतरित हुए, उन्हें अजनबी माहौलों में पुनर्सामाजिकरण और समायोजन की पूरी प्रक्रिया को अनुभव करना पड़ा। यह प्रक्रिया अक्सर लोगों के दिन-प्रतिदिन की समस्याओं को समाधान करने के लिए महत्वपूर्ण थे, उनके पारंपरिक आजीविका स्रोतों, लोक ज्ञान, और लोक संस्कृति के नाश का अर्थ करते थे। बाधा या तो शारीरिक या आर्थिक रूप से हो सकती है। शारीरिक बाधा में लोगों की वास्थानिक पुनर्वास की वास्तविक पुनर्थान का शामिल होता है, जिससे आवास, उत्पादक संपत्तियों, या भूमि, जल, और वन जैसे उत्पादक संसाधनों तक का पहुंच खो जाता है। आर्थिक बाधा उन कार्रवाईयों से होती है, जो लोगों को शारीरिक रूप से स्थानांतरित किए बिना उत्पादक संपत्तियों तक का पहुंच रोकती या खत्म करती है। जादुगुरा यूरेनियम खनन परियोजना ने समय के साथ लोगों को व्यवस्थित रूप से बाधित किया, उनके सामाजिक संरचना और आर्थिक आधारों को व्यवस्थित किया और उनकी गरीबी का कारण बनाया, जो अस्वीकार्य माना गया। यह पेपर यूसीआईएल खनन और प्रसंस्करण इकाई के संदर्भ में बाधित लोगों के सामाजिक जीवन की गतिविधियों का अध्ययन करने का उद्देश्य रखता था।

[9] हेगड़े, पी॰, और हेगड़े, ओ॰ डी॰ (2012)। जनजातीय महिलाओं की आर्थिक सशक्तिकरण का अध्ययन किया गया, जिन्हें जनजातीय समाज के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, और धार्मिक पहलुओं में महत्वपूर्ण भूमिका दी जाती है। यहां तक कि जनजातियों के समाज में आर्थिक संपत्ति के रूप में माने जाने के बावजूद, जनजातीय महिलाएं शिक्षा, रोजगार, अच्छे स्वास्थ्य, और आर्थिक सशक्तिकरण जैसे विभिन्न पहलुओं में पीछे छूट रही थीं। सशक्तिकरण को कमजोर वर्गों, विशेष रूप से गरीब जनजातीय महिलाओं को शक्ति और संसाधनों को प्राप्त और प्रबंध करने की अनुमति के रूप में समझा गया। डेटा का विश्लेषण करने और क्षेत्रीय अवलोकन करने के बाद, पता चला कि शिक्षा की कमी, खराब स्वास्थ्य स्थिति, उच्च शिशु मृत्यु दर, कम वेतन कार्य, सीमित आत्मनिर्भरता के अवसर, पर्याप्त संगठन क्षमता की कमी, और नेतृत्व की गुणवत्ता को जनजातीय महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण के मुख्य बाधाओं के रूप में निर्दिष्ट किया गया। सरकार और गैर-सरकारी संगठनों के लिए उन्हें जनजातीय महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण को लक्ष्य बनाने के लिए उपयुक्त योजनाओं और कार्यक्रमों का विकसित करने के लिए सिफारिशें की गईं।

[10] मास, जे॰, और बासु, एम॰ (2005)। ट्रिकल अप कार्यक्रम, एक संयुक्त राज्य अमेरिका का संगठन, 14 मुख्य देशों, भारत समेत, में बहुत गरीब घरों के लिए सूक्ष्मव्यवसाय विकास में लिया गया था। इसके लक्ष्य क्षेत्रीय भूमिहीन व्यक्तियों, महिला-नेतृत्व वाले घरों, विकलांग और आर्थिक रूप से असमर्थ अल्पसंख्याकों जैसे भ्रामक जनसंख्या का निशाना बनाता था, ट्रिकल अप अपने ग्राहकों को पूरी गरीबी से आर्थिक स्वायत्तता की ओर ले जाने के लिए एक बीज पूंजी अनुदान रणनीति का उपयोग करता था। ट्रिकल अप के ग्राहक, अपनी अधिकांश आय की कमी के कारण ऋण नहीं ले सकते थे, इसलिए उन्हें शर्तों पर अनुदान प्रदान किया गया था। यह दृष्टिकोण, ऋण की तुलना में, प्राप्तकर्ताओं को कम जोखिम के साथ अधिक लाभ प्रदान करता था और उन्हें लंबे भुगतान अवधियों वाले व्यवसाय विकसित करने की अनुमति देता था। एक हाल ही में आयोजित अध्ययन से प्रेरित होकर, ट्रिकल अप के भारतीय गाँवीय उड़िया में साथी संगठनों में से एक, गरीबी की अत्यंत स्थिति से अपने ग्राहक सफलतापूर्वक आर्थिक स्वायत्तता की ओर सफलतापूर्वक परिणत हो गए।

[11] दवे, वी॰, और वासवादा, म॰ (2022)। वर्तमान अनुसंधान एक समीक्षा-आधारित अध्ययन था जिसका उद्देश्य भारत में स्व-सहायता समूह (एसएचजी) महिलाओं के सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण को समझना था, विशेष रूप से गुजरात पर ध्यान केंद्रित किया गया। भारत के पांच भौगोलिक क्षेत्रों में से प्रत्येक से एक राज्य यादृच्छिक रूप से चयनित किया गया, जिसमें गुजरात को पुस्तकालयों में लिखित साहित्य की समीक्षा के लिए एकाधिकारिक रूप से चुना गया। 2014 के बाद उपलब्ध होने वाले हाल की पुस्तकों को समीक्षा करने के लिए एक व्यवस्थित तकनीकी प्रक्रिया का पालन किया गया। स्टडीज़ में समीक्षा की गई अध्ययनों ने दिखाया कि सभी राज्यों में, जिसमें गुजरात भी था, एसएचजी ने समाज में और आर्थिक रूप से महिलाओं की सशक्तिकरण में कारगर भूमिका निभाई। एसएचजी में शामिल होने के बाद आर्थिक सुधार का सामर्थ्य सामाजिक सुधार को सभी अध्ययन राज्यों में पीछे छोड़ गया। केरल में एसएचजी की समाजिक और आर्थिक रूप से महिलाओं को

सशक्तिकरण में बेहतर प्रदर्शन किया गया था। परिणामों ने यह सुझाव दिया कि नियोजक और नीति निर्माताओं को भारत के सभी राज्यों में ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं के साथ सामाजिक उत्थान के लिए रणनीतिक योजनाओं पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

[12] प्रसाद, एस·, आत्मा। (2023)। इस पेपर ने झारखंड के पंचायतों के स्तर पर पेसा (PESA) के कार्यान्वयन की स्थिति की जांच की। इसने यह दावा किया कि झारखंड को और अधिक सुदृढ़ और प्रमोट करना चाहिए कि पंचायतों के स्तर पर सुनिश्चित किया जाए कि पेसा अधिनियम 1996 के तहत ग्राम सभाओं को विचारित शक्तियों का आनंद उठाएं। यह उजागर किया कि इतिहासिक वंचितता, जब झारखंड संयुक्त बिहार का हिस्सा था, तो स्थानीय स्तर पर विकास की वर्तमान स्थिति में योगदान दिया। जब झारखंड एक नया राज्य बना, तो पहले इसने अस्थिर सरकारों और पंचायत चुनावों में देरी जैसी चुनौतियों का सामना किया, जिससे स्थानीय सरकारन में जनजातीय भागीदारी में बाधा आई। पेपर ने झारखंड के निर्धारित क्षेत्रों में निर्देशक प्राधिकरण को बढ़ावा देने के लिए नीति के प्रसंग को सुझाव दिया।

संदर्भ और निष्कर्ष

संदर्भ	मुख्य फोकस	निष्कर्ष
[1] शंकर और उनके सहकर्मी *(2021)*	*MGNREGS* के अंतर्गत अनुदानरहित महिलाओं, जनजातियों, और छोटे किसानों के लिए हाल ही में शामिलजन एवं स्वायत्तता के बारे में अध्ययन।	*MGNREGS* के तहत हॉर्टिकल्चर योजना, "बिरसा मुंडा बागवानी योजना" *(BMBY)*, ने महत्वपूर्ण प्रभाव डाला।
[2] ऐंड, टी·, एवं ओराओं, एस· *(2013)*	झारखंड में जनजातियों की आर्थिक सशक्तिकरण की जांच।	शिक्षा, स्वास्थ्य, और आर्थिक सशक्तिकरण में अभाव का विश्लेषण।
[3] पल्ली, आर।, देब, ए।, और भद्रा, पी। *(2020)*	झारखंड के जनजातियों के गाँवों में स्व-सहायता समूहों *(SHGs)* के माध्यम से महिलाओं की सशक्तिकरण पर ध्यान केंद्रित।	*SHG* द्वारा प्राप्त समस्याओं और प्रतिबंधों को संबोधित करने के उपाय सुझाए।
[4] रेवानी, एस· के·, और तोचवांग, एल· *(2016)*	झारखंड के रांची जिले में पालतू पशु पालन में लगे महिला स्व-सहायता समूह *(SHG)* के सामाजिक	सदस्यों के सामाजिक सशक्तिकरण में सकारात्मक परिवर्तन को हाइलाइट किया।

	सशक्तिकरण का मूल्यांकन।	
[5] घोष, बी॰ एन॰ *(Year)*	झारखंड के गांवों में जनजातीय महिलाओं के बीच विकास के सूचक के रूप में सशक्तिकरण का अन्वेषण।	शिक्षा और स्वास्थ्य के बारे में जागरूकता का स्तर संतोषप्रद नहीं था।
[6] आशोक, एम॰ वी॰, और ओझा, पी। *(2002)*	झारखंड महिला स्व-सहायता पोल्ट्री संघ का प्रमुख उदाहरण	झारखंड में ब्रायलर पक्षियों के बाजार का अध्ययन
[7] लोहानी, जे॰ के॰, और ओली, डी। *(2018)*	उत्तराखंड के ग्रामीण महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण	माइक्रोफाइनेंसिंग के माध्यम से महिलाओं की आर्थिक सशक्तिकरण की बढ़ती उम्मीदें
[8] कुमार, पी। *(2018)*	झारखंड में बाधा और वंचितता के परिणाम	गैर-सरकारी संगठनों के लिए आर्थिक सशक्तिकरण के लिए योजनाओं और कार्यक्रमों की सिफारिश
[9] हेगड़े, पी॰, और हेगड़े, ओ॰ डी॰ *(2012)*	जनजातीय महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण	सरकार और गैर-सरकारी संगठनों के लिए जनजातीय महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण को लक्ष्य बनाने के लिए उपयुक्त योजनाओं और कार्यक्रमों की सिफारिश
[10] मास, जे॰, और बासु, एम॰ *(2005)*	ट्रिकल अप कार्यक्रम: गरीबी से आर्थिक स्वायत्तता की ओर	अधिक लाभ प्रदान करने वाली बीज पूंजी अनुदान रणनीति का उपयोग करना
[11] दवे, वी॰, और वासवादा, म॰ *(2022)*	भारत में स्व-सहायता समूह *(एसएचजी)* महिलाओं के सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण	एसएचजी ने भारत के विभिन्न राज्यों में महिलाओं के सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण में कारगर भूमिका निभाई, जैसे कि गुजरात में आर्थिक सुधार का सामर्थ्य सामाजिक सुधार को पीछे छोड़ गया।
[12] प्रसाद, एस॰, आत्मा। *(2023)*	झारखंड के पंचायतों के स्तर पर पेसा *(PESA)* के कार्यान्वयन	झारखंड में पेसा अधिनियम *1996* के कार्यान्वयन की स्थिति का जांच किया गया, और यह सुझाव दिया कि स्थानीय स्तर पर सुनिश्चित किया जाए कि ग्राम सभाओं को विचारित शक्तियों का आनंद मिले।

निष्कर्ष

समापन में, झारखंड के धालभूमगढ़ में आदिवासी महिलाओं की आर्थिक स्वाबलंबना, उनके लिए वादितव्यों के साथ-साथ कई अवसरों और भयानक चुनौतियों का सामना करती है। इस अध्ययन के दौरान, हमने इन महिलाओं के लिए आर्थिक परिदृश्य को आकार देने वाले बहुपक्षीय कारकों का अन्वेषण किया है, जो उनकी वर्तमान स्थिति, उनके लिए उपलब्ध अवसरों और स्वाबलंबना की प्राप्ति में आने वाली बाधाओं के प्रकार पर प्रकाश डालते हैं।

पहली बात, हमारा धालभूमगढ़ में आदिवासी महिलाओं की आर्थिक स्थिति का मूल्यांकन एक मिश्रित चित्र प्रकट किया। हालांकि कई महिलाएं कृषि, हस्तशिल्प, और लघु उद्यमों जैसी विभिन्न आर्थिक गतिविधियों में सक्रिय रहती हैं, लेकिन उनकी आय स्तर मात्र कम है, और वे अक्सर संसाधनों और विकास के अवसरों को पहचानने में चुनौतियों का सामना करती हैं। शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण तक की पहुंच की सीमा इन चुनौतियों को और भी विकट बनाती है, जिससे उनकी आर्थिक गतिविधियों में विविधता लाने और उच्च-मूल्य आर्थिक गतिविधियों में भाग लेने की क्षमता को अधिक हानि होती है।

इन चुनौतियों के बावजूद, हमारे अध्ययन ने धालभूमगढ़ में आदिवासी महिलाओं के लिए आर्थिक सशक्तिकरण के कई आशाजनक अवसरों की पहचान की है। आत्मसहायता समूह (एसएचजी), माइक्रोफाइनेंस कार्यक्रम, और कौशल विकास पहलों जैसे पहलों ने क्षेत्र में महिलाओं की आर्थिक क्षमताओं को बढ़ावा देने में संभावनाएं दिखाई। वृहद्धि की ओर कदम बढ़ाने के लिए राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण के महत्व को बढ़ावा दिया जा रहा है, जिससे आदिवासी महिलाओं के लिए निशुल्क उद्यमों और समर्थन कार्यक्रमों की वृद्धि हुई है। हालांकि, धालभूमगढ़ में आदिवासी महिलाओं के आर्थिक स्वाबलंबना की दिशा में यात्रा बिना रुकावट नहीं है। गहने रूप से संसाधनों और अवसरों तक पहुंच में समाजिक-सांस्कृतिक नियम और पारंपरिक लिंग भूमिकाओं की कमी और भेदभाव, बुनियादी संरचना की कमी, और बाजारों तक पहुंच की अपर्याप्तता इन चुनौतियों को और भी बढ़ाती हैं, जिससे आर्थिक सशक्तिकरण में महिलाओं की रास्ता में महत्वपूर्ण बाधाएँ उत्पन्न होती हैं। इन खोजों के प्रकाश में, सिस्टमिक बाधाओं को दूर करने के लिए एकत्रित प्रयासों की आवश्यकता है जो धालभूमगढ़ की आदिवासी महिलाओं की आर्थिक स्वाबलंबना को अवरुद्ध कर रहे हैं। नीति प्रवेशिकाओं को शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण तक पहुंच को बढ़ाने, संरचनात्मक बुनियादी सुधार करने, और महिलाओं के आर्थिक भागीदारी के लिए एक संरक्षक वातावरण बनाने पर ध्यान केंद्रित करना

संदर्भ

1. शंकर, पी॰, भास्कर, पी॰, & हंस, ए॰ (2021). महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना के तहत असमर्थ और अत्यंत गरीब महिलाओं, जनजाति समुदाय और छोटे किसानों के स्वायत्त (आत्मनिर्भर) बनने पर

हाल ही में समावेशी प्रस्ताव का एक अन्वेषणात्मक अध्ययन· भारत के झारखंड राज्य में· शैक्षणिक प्रबंधन और सामाजिक विज्ञान पत्रिका, 2(1), 66-79.

2. ऐंड, टी·, & ओराओं, एस· (2013). झारखंड में जनजातीय महिलाओं की आर्थिक सशक्तिकरण - एक विश्लेषण· अनुसंधानिका, 5(1/2), 85.

3. पल्ली, आर·, देब, ए·, & भाद्रा, पी· (2020). स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिला सशक्तिकरण: झारखंड के जनजातीय गाँवों से आगत उज्ज्वलताएं· संपादकीय बोर्ड, 9(4), 186.

4. रेवानी, एस· के·, & टोचहावंग, एल· (2016). पशुपालन में लगी महिला स्वयं सहायता समूह सदस्यों की सामाजिक सशक्तिकरण· भारतीय अनुसंधान विस्तार शिक्षा पत्रिका, 14(2), 116-119.

5. घोष, बी· एन· ग्रामीण झारखंड में जनजातीय महिलाओं के विकास का सूचकांक के रूप में सशक्तिकरण· भारतीय समाजशास्त्र सोसायटी·

6. आशोक, एम· वी·, & ओझा, पी· झारखंड महिला स्वयं सहायक मुर्गी संघ: सहयोग का एक पूरा उदाहरण· उपनियमन के माध्यम से बाजारों का प्रोत्साहन: संगठन के अनुभव।

7. लोहानी, जे· के·, & ओली, डी· उत्तराखंड के ग्रामीण महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण में स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) की भूमिका [काफल स्वयं सहायता समूह का एक उदाहरण का अध्ययन]।

8. कुमार, पी· (2018). झारखंड में विस्थापन और वंचितता· भारत में अत्याचार: थीम्स एंड परिप्रेक्ष्य, 53-71.

9. हेगडे, पी·, & हेगडे, ओ· डी· (2012). कर्नाटक में जनजातीय महिलाओं की आर्थिक सशक्तिकरण: मैसूर और चामराजनगर जिलों में एक अध्ययन· जनजातियों और जनजातियों के अध्ययन, 10(2), 173-181.

10. मेस, जे·, & बासु, एम· (2005). आर्थिक आत्मनिर्भरता का निर्माण: ट्रिकल अप के अत्यंत गरीब ग्रामीण भारत में उद्यमिता बीज पूंजी। लघुवित्त/ईएसआर समीक्षा, 7(2), 6.

11. दवे, वी·, & वासवाड़ा, एम· (2022). स्वयं सहायता समूह महिलाओं का सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण: भारत में एक अवलोकन, विशेष संदर्भ गुजरात। अंतर्राष्ट्रीय नवाचार और अनुसंधान विश्लेषण, 101-108.

12. प्रसाद, एस·, मित्र, ए·, चिंतमणी, बी· जी·, श्रीवास्तव, जी·, नायकाडे, के·, & शेल्के, ए· (2023). पंचायतों के अधीन विस्थापित क्षेत्रों के दर्जनबंदी की स्थिति: झारखंड।